Azim Premji University

शैक्षणिक अपेक्षाएँ, आकांक्षाएँ और संरचनागत रुकावटें

Field Studies in Education | January 2019

These papers present findings from Azim Premji Foundation's field engagements in trying to improve the quality and equity of school education in India. Our aim is to disseminate our studies to practitioners, academics and policy makers who wish to understand some of the key issues facing school education as observed by educators in the field. The findings of the paper are those of the Research Group and may not reflect the view of the Azim Premji Foundation including Azim Premji University.

शैक्षणिक अपेक्षाएँ, आकांक्षाएँ और संरचनागत रुकावटें

Research Group | Azim Premji Foundation

Contact : field.research@azimpremjifoundation.org

प्रस्तावना

पिछले दो दशकों ने इस मिथक को दूर कर दिया है कि भारत में गरीब अभिभावकों के बीच औपचारिक स्कूली शिक्षा की न्यून माँग स्कूली शिक्षा में भागीदारी की राह में रुकावट रही है। तमाम सामाजिक व जेंडर विभाजनों के परे जिस तरह से स्कूली शिक्षा के हर स्तर पर नामांकन बढ़ रहे हैं उससे यह बात बिल्कुल साफ हो गई है। लेकिन गरीब तबकों के अभिभावकों के बीच शिक्षा की बढ़ती माँग की व्याख्या अकसर इस तरह से की जाती है कि वे महज़ यह उम्मीद रखते हैं कि स्कूली शिक्षा से उनके बच्चों को आजीविका व रोजगार पाने में मदद मिल जाएगी। स्कूली शिक्षा के बारे में प्रचलित मान्यताओं से लेकर वर्तमान नीतिगत विमर्शों तक में यही धारणा बनी हुई है।

एक हालिया ज़मीनी अध्ययन में हमने शिक्षा को लेकर अभिभावकों की अपेक्षाओं और स्कूली शिक्षा के बाद अपने बच्चों के कैरियर को लेकर उनकी आकांक्षाओं दोनों का अवलोकन किया। यह अध्ययन ग्रामीण भारत में स्कूल चयन पर किए गए एक बड़े शोध[1] पर आधारित था जिसमें 4 राज्यों के 10 ज़िलों के 121 सरकारी व कम फीस वसूलने वाले निजी स्कूल और 1210 अभिभावक शामिल थे। कुल मिलाकर, इस नमूने में आधे से थोड़े अधिक (51 फीसदी) बच्चे सरकारी स्कूलों में जाते हैं और बाकी निजी स्कूलों में। इन दोनों श्रेणियों के स्कूलों में जाने वाले बच्चों के परिवारों की सम्पत्ति के स्तर में अच्छा-खासा अन्तर था - सबसे कम सम्पत्ति वाले परिवारों के 71 फीसदी बच्चे सरकारी स्कूलों में जा रहे थे जबकि सबसे ज़्यादा सम्पत्ति वाले परिवारों के मात्र 17 फीसदी बच्चे ही सरकारी स्कूलों में जा रहे थे।

1. अभिभावकों के अनुसार शिक्षा कैसे उपयोगी है?

इस अध्ययन में शिक्षा से अभिभावकों की अपेक्षाओं को इस संदर्भ में समझने की कोशिश की गई कि लड़कियों व लड़कों के लिए अलग-अलग तरह से शिक्षा उपयोगी है या नहीं इस बारे में उनकी क्या राय है और अपनी राय को सही ठहराने के लिए उनके क्या तर्क हैं। लगभग सभी (96 फीसदी से ज़्यादा) अभिभावकों ने माना कि शिक्षा लड़कों व लड़कियों दोनों के लिए उपयोगी है। जब उनसे यह पूछा गया कि उनके अनुसार शिक्षा के उपयोगी होने की मुख्य वजह क्या है तो 30 फीसदी से ज़्यादा अभिभावकों ने जो कारण बताए उनका सम्बन्ध रोज़गार पाने की क्षमता से था। और इसे लड़कियों की बजाय लड़कों के लिए ज़्यादा ज़रूरी वजह माना गया। इसके साथ ही, 25 फीसदी से ज़्यादा अभिभावकों ने लड़कों व लड़कियों दोनों के लिए ऐसी वजहें बताईं जिनका सम्बन्ध महज़ रोज़गार की बजाय व्यापक सामाजिक उद्देश्यों के लिए शिक्षा की उपयोगिता से था। यह वजहें उनकी इन अपेक्षाओं से अलग थीं कि स्कूली शिक्षा उनके बच्चों को बेहतर

1. शोध समूह, 2018, स्कूल च्वॉएस इन लो-इनफॉरमेशन एनवायरमेन्ट: ए स्टडी ऑफ़ पर्सेप्शंस एंड रियलिटिज, (School choice in low-information environments: A study of perceptions and realities) अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन।

आजीविका या रोज़गार पाने में मदद करेगी।[2] इन वजहों को हमने 'सामाजिक उद्देश्य' की श्रेणी में रखा है जो तीन तरह के हैं। पहला, वे वजहें जिनमें आत्म-सम्मान पर ज़ोर था (जो इस पर आधारित था कि व्यक्ति अपने जीवन में कुछ हासिल कर सके, चाहे वह चीज़ बिल्कुल ही मामूली क्यों न हो); दूसरा, वे वजहें जिनमें समाज में सम्मान पर ज़ोर दिया गया था (ऐसे अशिक्षित लोगों की तुलना में जिनकी समाज में न तो कोई पहचान होती है और न ही कोई सम्मान); तीसरा, वे वजहें जिनमें सशक्तिकरण पर ज़ोर दिया गया (यानी एक स्वतंत्र जीवन जीने की क्षमता)।

तालिका 1 में उन अभिभावकों के अनुपात को दिखाया गया है जिन्होंने दी हुई वजहों को शिक्षा से मिलने वाले सबसे महत्त्वपूर्ण तीन फायदों में से एक माना है। ध्यान देने की बात है कि आत्म-सम्मान, समाज में सम्मान, और सशक्तिकरण जैसे तालीम के तीन सामाजिक उद्देश्य जिनका रोज़गार या आजीविका से कोई सम्बन्ध नहीं है वे लड़कों व लड़कियों दोनों के अभिभावकों के लिए महत्त्वपूर्ण दिखी और अभिभावकों के सबसे बड़े अनुपात (84 फीसदी) के लिए शिक्षा की तीन सबसे बड़ी वजहों में से एक थी। स्कूली तालीम से मिलने वाले बड़े फायदों में से एक रोज़गार लड़कियों की तुलना में लड़कों के लिए ज्यादा महत्त्वपूर्ण रहा (52 के मुकाबले 71 फीसदी)। इसी तरह, शिक्षा को लेकर बनी अपेक्षाओं में जेण्डर-भेद इस बात से प्रकट हुआ कि लड़कियों के लिए घरेलू कामकाज और शादी शिक्षा के तीन सबसे महत्त्वपूर्ण फायदों में रहे (53 फीसदी) जबकि लड़कों के लिए यह अनुपात 13 फीसदी ही था। शिक्षा के सन्दर्भ में सामाजिक गतिशीलता और अपने जीवन की स्थितियों में सुधार सम्बन्धी आकांक्षामूलक कारण भी लड़कियों की बजाय लड़कों के लिए ज़्यादा महत्त्वपूर्ण रहे (28 के मुकाबले 41 फीसदी।[3]

तालिका 1: लड़कों व लड़कियों के लिए शिक्षा की उपयोगिता के सम्बन्ध में अभिभावकों की राय (सबसे महत्त्वपूर्ण 3 वजहें)

	लड़के	लड़कियाँ
रोज़गार सम्बन्धी	71	52
सामाजिक उद्देश्य	84	84
शादी व सम्बन्धित घरेलू ज़िम्मेदारियाँ	13	53
जीवन के बुनियादी कौशल	35	29
आकाँक्षामूलक कारण	41	28

2. अध्ययन के इस हिस्से के लिए जो फैमिली सर्वे टूल इस्तेमाल किया गया उसका उद्देश्य था शोध के मुख्य सवालों से जुड़े मसलों पर परिवार की समझ का बारीकी से पता लगाना। शिक्षा की उपयोगिता के बारे में उनकी राय व उसकी वजहों से जुड़े सवाल इसलिए पूछे गए ताकि अभिभावकों के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण कारकों के साथ-साथ उनकी व्यापक प्रतिक्रिया को जाना जा सके।

3. विभिन्न श्रेणियों के प्रति अभिभावकों की कुछ प्रतिक्रियाएँ इस प्रकार थी - रोज़गार से जुड़ी (बेहतर नौकरी का मिलना; कमाई के ज़्यादा मौकों का मिलना; सरकारी नौकरी मिलना; बेहतर कमाई वाले काम मिलना, अब मजदूरी के काम को छोड़कर अन्य कामों के लिए लोग पूछते हैं कि तुमने कितनी पढ़ाई की है); सामाजिक उद्देश्य (पति के बेकार निकलने या शादी के बाद कोई सहारा न होने की स्थिति में शिक्षित लड़की परिवार की देखभाल कर सकेगी; सामाजिक सम्मान क्योंकि अशिक्षित लोगों को समाज में सम्मान नहीं मिलता; सही-गलत का भेद करने की क्षमता); शादी की संभावना व संबंधित घरेलू ज़िम्मेदारियाँ (अशिक्षित लड़की की तुलना में शिक्षित लड़की की शादी की संभावनाएँ ज़्यादा होती हैं; शिक्षित अभिभावक अपने बच्चों को खुद भी शिक्षित बनाएँगे); बुनियादी जीवन कौशल (परिवार की छोटी दुकान या व्यवसाय की देखभाल की काबिलियत; हिसाब-किताब का ज्ञान; अर्जियाँ देने के लिए दूसरों की मदद की ज़रूरत नहीं होगी); आकांक्षामूलक कारण (जो काम कर रहे हैं उससे बेहतर कुछ करने की संभावना; बड़े शहरों में जाकर बेहतर नौकरियाँ मिलने की संभावनाएँ)।

2. बच्चों के करियर को लेकर अभिभावक क्या सोचते हैं?

तालीम से अपेक्षाओं के अलावा अभिभावकों से यह भी पूछा गया कि स्कूली शिक्षा के बाद अपने बच्चों के करियर को लेकर उनकी क्या उम्मीदें थीं (तालिका 2)। इस सवाल के जवाब में सरकारी स्कूलों में जाने वाले बच्चों के अभिभावक व निजी स्कूल जाने वाले बच्चों के अभिभावकों के बीच अंतर दिखा। लेकिन आश्चर्य की बात है कि इन दोनों ही समूहों के अभिभावकों में सरकारी नौकरियों की चाह काफी ऊँची थी - सरकारी स्कूल के बच्चों के 44 फीसदी अभिभावक व निजी स्कूल जाने वाले बच्चों के 46 फीसदी अभिभावक सरकारी नौकरी की उम्मीद रखते थे। जैसा कि अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की स्टेट ऑफ़ वर्किंग इंडिया 2018 जैसी रपटों से पता चलता है, इसका कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में नौकरियों की गुणवत्ता व मात्रा में हो रही गिरावट हो सकती है, जिसके चलते सरकारी नौकरियों की माँग में बढ़ोतरी हुई है।[4] सरकारी नौकरियों में भी बच्चे के शिक्षक बनने की इच्छा दोनों समूहों के अभिभावकों में ऊँची रही।[5] डॉक्टर व इंजीनियर जैसे पेशेवर करियर का रुझान निजी स्कूल के बच्चों के अभिभावकों (16 फीसदी) में सरकारी स्कूल के बच्चों के अभिभावकों (10 फीसदी) की तुलना में ज़्यादा था।

तालिका 2: स्कूल के प्रकार के आधार पर बच्चों के करियर के सम्बन्ध में अभिभावकों की आकांक्षाएँ (% में)

		सरकारी स्कूल	निजी स्कूल
सरकारी नौकरी			
	शिक्षक	16	15
	सेना/पुलिस	11	10
	अन्य सरकारी नौकरियाँ	17	21
नर्स		2	2
पेशेवर करियर		10	16
स्वयं का व्यवसाय		2	2
पारिवारिक व्यवसाय		0	1
कोई निर्णय नहीं लिया		40	31
अन्य		1	2

(सभी आँकड़ों को निकटस्थ अंक में बदल दिया गया है)

4. बसोले व अन्य, 2018, स्टेट ऑफ़ वर्किंग इन इंडिया 2018, बैंगलूरु; अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय।

5. हालाँकि शिक्षक बनने की पसंद में निजी स्कूल का शिक्षक बनना भी शामिल है लेकिन व्यापक अध्ययन का गुणात्मक नतीजा यह है कि खासतौर से ग्रामीण इलाकों में सरकारी स्कूल शिक्षक बनने की तरफ ज़्यादा रुझान था।

जहाँ तक कुछ निश्चित पेशों की बात थी, अभिभावकों की पसंद में स्पष्ट जेण्डर विभेद देखने को मिला (तालिका 3)। उदाहरण के लिए, जहाँ लड़कियों के लिए शिक्षक का पेशा 20 फीसदी अभिभावकों की पसंद था वहीं लड़कों के मामले में यह महज़ 11 फीसदी था। इसके विपरीत, लड़कों के लिए 15 फीसदी अभिभावकों ने सेना या पुलिस की नौकरी को पसंद किया जबकि लड़कियों के मामले में यह पसंद महज़ 6 फीसदी थी। यह दिलचस्प है कि जहाँ तक पेशेवर करियरों का सवाल है लड़कियों व लड़कों के बीच अभिभावकों की पसंद में कोई खास अंतर देखने को नहीं मिला।

तालिका 3: जेन्डर के आधार पर बच्चों के कैरियर के सम्बन्ध में अभिभावकों की आकांक्षाएँ (% में)

		लड़कियाँ	लड़के
सरकारी नौकरी			
	शिक्षक	20	11
	सेना/पुलिस	6	15
	अन्य सरकारी नौकरियाँ	18	20
नर्स		3	1
पेशेवर करियर		12	14
स्वयं का व्यवसाय		2	3
पारिवारिक व्यवसाय		0	0
कोई निर्णय नहीं लिया		37	34
अन्य		2	2

परिवारों की आर्थिक हैसियत और पेशेवर करियर को लेकर अभिभावकों की आकांक्षा के बीच का सम्बन्ध बच्चों को सरकारी व निजी दोनों प्रकार के स्कूलों में भेजने वाले अभिभावकों के समूह में देखने को मिला (तालिका 4)। दोनों मामलों में पेशेवर करियर ऊँची आर्थिक हैसियत वाले अभिभावकों को ज्यादा पसंद था। जहाँ बच्चों को सरकारी स्कूलों में भेजने वाले अभिभावकों में आर्थिक हैसियत में अंतर के बावजूद सरकारी नौकरियों के प्रति समान रूप से अधिक रुझान देखने को मिला वहीं बच्चों को निजी स्कूल भेजने वाले अभिभावकों की आर्थिक हैसियत के बढ़ने पर सरकारी नौकरी के प्रति रुझान गिरता हुआ दिखाई दिया।

तालिका 4: सबसे गरीब व सबसे अमीर अभिभावकों में सरकारी व पेशेवर नौकरियों के प्रति रुझान (% में)

		सबसे गरीब परिवार	सबसे अमीर परिवार
सरकारी स्कूल	सरकारी नौकरियाँ	43	51
	पेशेवर कैरियर	8	15
निजी स्कूल	सरकारी नौकरियाँ	50	41
	पेशेवर कैरियर	12	24

एक और अवलोकन जो देखने को मिला वह यह था कि माता की शिक्षा का स्तर जितना ऊँचा था उतना ही बच्चों के लिए पेशेवर करियर की पसंद भी ऊँची थी। खासकर निजी स्कूल जाने वाले बच्चों के मामले में (तालिका 5)। सरकारी व निजी दोनों तरह के स्कूलों में जाने वाले बच्चों के संदर्भ में, सरकारी नौकरियाँ उन परिवारों में सबसे ज़्यादा पसंद की जा रही थी जिनमें माताएँ सबसे कम शिक्षित थीं।

तालिका 5: माता की शिक्षा के स्तर के संदर्भ में सरकारी व पेशेवर नौकरियों के लिए अभिभावकों का रुझान

शिक्षा का स्तर	सरकारी स्कूल		निजी स्कूल	
	सरकारी नौकरियाँ	पेशेवर नौकरियाँ	सरकारी नौकरियाँ	पेशेवर नौकरियाँ
अशिक्षित या प्राथमिक से नीचे	49	8	57	10
प्राथमिक (5वीं)	47	10	44	15
उच्च प्राथमिक (8वीं)	46	12	44	17
10वीं या 12वीं पास	36	19	40	19
डिप्लोमा या उससे ऊपर की तालीम	25	9	29	30

उपसंहार

यह अध्ययन दो महत्त्वपूर्ण मुद्दों को रेखांकित करता है। पहला, अभिभावक शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य को भी मूल्यवान मानते हैं और उसे महज़ रोजगार का साधन नहीं मानते। इससे जुड़ी जो वजहें अभिभावकों ने बताई – मसलन, आत्म-सम्मान, समाज में सम्मान, और सशक्तिकरण – ये एक लोकतांत्रिक समाज के बुनियादी विचार से मेल खाते हैं और इनको नीतिगत स्तर पर भी शिक्षा के केन्द्रीय उद्देश्यों के रूप में देखा गया है।[6] दूसरा, पेशेवर करियर के प्रति ऊँचा रुझान अभिभावकों की ऊँची आर्थिक हैसियत और शिक्षा के स्तर से जुड़ा हुआ देखा गया। इन जानकारियों से यह पता चलता है कि विभिन्न पृष्ठभूमि के अभिभावकों की आकांक्षाओं के दायरे को तय करने में सामाजिक व आर्थिक स्थितियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। संभवतः अपने बच्चों को निजी स्कूल भेजने वाले अभिभावकों की तुलना में बच्चों को सरकारी स्कूल भेजने वाले गरीब अभिभावकों के मामले में संरचनागत बाधाएँ इस दायरे को सीमित कर देती हैं।

भारत में बढ़ते क्रम में स्कूली शिक्षा की प्रचलित समझ व नीतिगत विमर्श तालीम के संकीर्ण उपकरणवादी नज़रिए की तरफ झुकते जा रहे हैं जो शिक्षा को मुख्य रूप से बुनियादी रोजगार के लिए उपयोगी मानते हैं। लेकिन जैसा कि हमारा अध्ययन दिखाता है, अभिभावक रोजगार के अलावा शिक्षा के दूसरे उद्देश्यों को भी मूल्यवान मानते हैं। ये उद्देश्य भारत के संविधान के बुनियादी उद्देश्यों से सीधे जुड़े हुए हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन ये भी दिखाता है कि स्कूली शिक्षा के बाद बच्चे के करियर को लेकर अभिभावकों की आकांक्षाएँ उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि (और इस संदर्भ में स्कूलों के प्रकार में अंतर – यानी निजी या सरकारी स्कूल) के साथ-साथ उनके शैक्षणिक स्तर से जुड़ी हुई हैं। एक तरह से देखा जाए तो अभिभावकों की आकांक्षाएँ संरचनागत बाधाओं से बहुत ही ज़्यादा प्रभावित होती हैं। ऐसे परिदृश्य में, इस तरह की शिक्षा नीतियाँ जो कुछ तबकों के बच्चों को महज़ बुनियादी तालीम व कौशल की तरफ ले जाती हों वे संभव है कि उन संरचनागत बाधाओं का पुनरुत्पादन ही करती जाएँ। दूसरे शब्दों में वे ऐसी शिक्षा व्यवस्था को बरकरार रखेंगी जो अलग-अलग पृष्ठभूमियों के बच्चों को अलग-अलग सीखने के माहौल व करियर संभावनाएँ मुहैया कराती है। जबकि ज़रूरत ऐसी शिक्षा नीतियों की है जो स्कूली तालीम को सभी के लिए समतामूलक बनाने की दिशा में ले जाएँ।

6. एनसीईआरटी (2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

Ambuja Cement FOUNDATION
PRINTER प्रिन्टर
COMPACT DISK कॉम्पेक्ट डिस्क
KEYBOARD कीबोर्ड
MOUSE माऊस
SPEAKER स्पीकर
=2X लम्बाई +2X चौड़ाई ,
=4X भुजा

अभ्यास
① कितना लाभ / कितनी हानि
① क्रय मूल्य 136 , विक्रय मूल्य 143 लाभ 7 रु.
क्रय मूल्य = विक्रय - लाभ

Azim Premji University

Pixel Park, PES Campus, Electronic City, Hosur Road
Bangalore 560100

080-6614 5136
www. azimpremjiuniversity.edu.in

Facebook: /azimpremjiuniversity **Instagram:** @azimpremjiuniv **Twitter:** @azimpremjiuniv